Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 5, Issue 2 – 2020
ISSN: 2581-3501

भारतीय संस्कृति और राष्ट्रीयता में मीडिया की भागीदारी एवं प्रभाव

डॉ. सौरभ मालवीय[1]

[1]*सहायक प्राध्यापक, जनसंचार विभाग, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल*

सारांश

भारत विविधताओं से भरा देश है। यहां विभिन्न जाति, धर्म संप्रदाय और रीति रिवाजों को मानने वाले लोगों का निवास है। प्राचीन काल से ही भारत में समाज और संस्कृति का अपना एक स्थान रहा है। प्रत्येक धर्म के उदय के साथ ही उसकी संस्कृति और संस्कृति के साथ राष्ट्र के साथ संबंध की परिभाषाएं भी पनपती रही है। ऐसे समय में राष्ट्रियता संस्कृति के संचालन में एक प्रमुख घटक के रूप में सामने आया है। भारत में उदय और अस्तित्व में आई हर संस्कृति के केंद्र में राष्ट्रियता ही प्रमुख कारक रहा है। वर्तमान में राष्ट्रियता के जन जन तक प्रचार और प्रसार में मीडिया एक अनन्य अवयव एवं साधन के रूप में सामने आया है। प्रस्तुत शोध पत्र में संस्कृति और राष्ट्रियता के इसी संवाहक के रूप में मीडिया की भागीदारी और उसके प्रभाव का आकंलन किया है।

की-वर्ड- भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता, मीडिया।

संस्कृति से तात्पर्य और महत्ता

“संस्कृति किसी एक समाज में पाई जाने वाली उच्चतम मूल्यों की वह चेतना है,जो सामाजिक प्रथाओं,व्यक्तियों की चित्तवृतियों, भावनाओं, मनोवृतियो, आचरण के साथ-साथ उसके द्वारा भौतिक पदार्थों को विशिष्ट स्वरूप दिये जाने में अभिव्यक्त होती है” (सक्सेना, 2013)। मनुष्य एक समाजिक प्राणी है और संस्कृति उसके जीवन का एक अहम हिस्सा है। संस्कृति एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें रहकर मनुष्य एक सुरक्षित और सर्वमान्य जीवन यापन करता है। वह समाज को प्रर्यावरण और प्रकृति के अनुकूल बुनता है और स्वयं के लिए भी

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

एक योग्य समाज का निर्माण करता है। नृविज्ञान में 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग अत्यन्त व्यापक अर्थ में होता है। प्रसिद्ध मानव विज्ञानी 'मैलिनोव्स्की' के अनुसार, 'मानव जाति की समस्त सामाजिक विरासत या मानव की समस्त संचित सृष्टि का ही नाम संस्कृति है। ' (भारतकोश, दि.न.) भारत के आलावा विश्व के अन्य देशों में समय समय के साथ विभिन्न संस्कृतियों का अस्तित्व मिलता रहा है लेकिन समय के साथ ही इन संस्कृतियों के नष्ट या परिवर्तित होते रहने के प्रमाण भी मिलते रहते हैं। लेकिन भारत की संस्कृति पुरातन काल से ही अपने अस्तित्व को समेटे हुए है और यही कारण है कि इसे सनातन का नाम भी दिया गया है। सनातन से तात्पर्य अन्नत काल से एक जैसे ही स्वरूप में रहने से है। सैंकडों विश्वासों, आस्थों स्मृतियों और संस्कारों का यह संगम और पारस्परिक संवाद केवल भारतीय संस्कृति में ही हो सकता है जिसमें संपूर्ण मानव जाति का हित निहित है। (Patel, 2020) और भारतीय संस्कृति की इसी विशेषता के माध्यम से यह संपूर्ण विश्व में अपना एक योग्य स्थान रखती है। मानवविज्ञान के 'प्रकार्यात्मक स्कूल' के संस्थापक पोलैंड वेफ ब्रोनिसला मैलिनोवस्की ने लिखा है कि 'संस्कृति में उत्तराधिकार में प्राप्त कलाकृतियाँ, वस्तुएँ, तकनीकी प्रक्रिया, विचार, आदतें तथा मूल्य शामिल हैं।

संस्कृति और मीडिया के बीच संबंध

भारतीय संस्कृति में संवाद की महत्ता को अनदेखा नहीं किया जा सकता है। संस्कृति मानव के अंत का ज्ञान है और मानव जीवन और गतिविधियों के विभिन्न पहलुओं की जानकारी इसमें निहित होत है। यह व्यक्तिगत एक रूप से संचार और प्रतीकात्मक और बौद्धिक गतिविधि के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। संस्कृति की जड़, संस्कृति का हर पहलू एक मौलिक वैचारिक ढांचे से शुरू होता है। हालांकि संस्कृति परम्परागत रूप से विकसित होती है, फिर भी यह धर्मनिरपेक्षता के बीच कोई अवरोध नहीं पैदा करती है। संस्कृति पृष्ठभूमि में मीडिया जन मानस पर प्रभाव डालती है और समय समय पर यह सांस्कृतिक प्रभावों का प्रतिनिधित्व भी करती है। मीडिया एक व्यक्ति के निर्माण से लेकर एक समाज के निर्माण तक में व्यापक प्रभाव डालती है। और कलांतर में विभिन्न मीडिया रूपों में सांस्कृतिक समूहों के रूप में पहचाने भी जाते हैं। मीडिया सांस्कृतिक पहलू और उनके जुडे समूहों के लिए महत्वपूर्ण उपकरण की तरह कार्य करता है क्योंकि यह व्यक्तियों के बीच बातचीत से लेकर उनके सामूहिक रूप में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धारणाओं को एक आकार देता है।

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

संस्कृति और मीडिया एक दूसरे से अविभाज्य हैं क्योंकि मीडिया संस्कृति का हिस्सा है। विभिन्न सांस्कृतिक विरासत, गतिविधियों, का मीडिया प्रतिनिधित्व करता है,क्योंकि यह संस्कृति और लोगों के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है। मीडिया संदेशों के रूपमें प्रसारित होनी वाली संस्कृति के प्रभाव के रूप में यह आम जनमानस के दृष्टिकोण को सीधे बदल सकता है। मीडिया विशेष रूप से अखबार, रेडियो और टीवी बड़े पैमाने पर मीडिया संस्कृति का महत्वपूर्ण स्रोत है। मीडिया माध्यम सभी रूपों में जनमानस पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव डालते हैं। इन तीनों माध्मय में जो शामिल है वह है भाषा, जिसका मीडिया से सीधा संबंध हैं। भाषा संस्कृति का प्रभावी कारक है। और मीडिया भाषा का के संवाहक का प्रमुख स्त्रोत। कन्टेंट मीडिया का एक अभिन्न हिस्सा है भाषा पर निर्भर करता है और भाषा संस्कृति के अभिन्न हिस्सों में से एक है इस आधार पर कहा जा सकता है मीडिया संस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा है। इसलिए विशेष लक्ष्य को पूरा करने के लिए सांस्कृतिक मूल्यों में मीडिया को अंर्तनिहित किया जाता है।

राष्ट्रीयता और मीडिया

राष्ट्र कोई भौगोलिक संरचना मात्र नहीं है। इसे किसी भी तरह से जमीन का टुकड़ा मात्र नहीं माना जा सकता है और न ही यह किसी कबिले या कुनबे का नाम को राष्ट्र की संज्ञा दी जा सकती है। राष्ट्र एक सनातन अवधारणा है। हमारी राष्ट्रीय चेतना सांस्कृतिक रही है। भारत में राष्ट्र की परिकल्पना केवल मात्र राज्यों की सीमा के आधार पर नहीं बनाई गई है बल्कि यह राज्य की सीमाओं के साथ-साथ भावनात्मक एकता पर भी आधारित है, जो कि भारत के परम्परागत कला, दर्शन,साहित्य, संस्कृति तथा परम्पराओं आदि में व्याप्त एक विशिष्ट प्रेरणा की निरन्तरता और सर्वव्यापकतामें निहित है। किसी भी राष्ट्र में भिन्न क्षेत्रों भाषा जाति धर्म व संस्कृति के लोग रहते है, परन्तु इतने विभिन्नता के होते हुये भी किसी राष्ट्र के व्यक्ति समान हित की भावना से जुड़े होते हैं और सभी व्यक्तियों के इन समान हितों की रक्षा के लिये राज्य उत्तरदायी होता है और यह व्यक्ति को व्यक्तिगत हितों से ऊपर राष्ट्र के हितों को रखने पर ही सम्भव हो पाता है। राष्ट्रीयता में मूल शब्द राष्ट्र है, और यता प्रत्यय लगा है और इसका अभिप्राय है राष्ट्र के प्रति लगाव। (helplinetoday, 2019) विश्व में आदर्श समाज रचना की संकल्पना भारत की ही देन है। ईश्वर की खोज और विश्व के कल्याण का ध्येय वाक्य लेकर अनुसंधान करनेवाले प्राचीनतम ऋषि-मुनि हमारे यहां ही

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

हुए, इसलिए भारतवर्ष को राष्ट्र की संज्ञा प्रदत्त की गई है। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने 'राष्ट्र' की संकल्पना को बहुत स्पष्टता से व्यक्त किया है। वे कहते हैं, "हम ऐसे लोगों के समूह को 'राष्ट्र' नहीं कह सकते जो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों वाले, भिन्न-भिन्न विचारधाराओं वाले हों तथा जिनके इतिहास भिन्न हों, हिताहित कल्पनाएं परस्पर विरोधी हों, परस्पर शत्रुभाव मानते हों, जिनके आपसी सम्बन्ध भक्ष्य-भक्षक के रहे हों और जिनके रहने के मूल कारण भी एक से न हो। "राष्ट्रवाद और राष्ट्रीयता इन दोनों शब्दों का प्रयोग आजकल सामान्य हो चले हैं। हिंदी शब्दकोष में भी इसके लगभग सामान अर्थ हैं। शब्दकोश के अनुसार, 'राष्ट्रवाद' वह सिद्धांत है जिसमें अपने राष्ट्र के हितों को सबसे अधिक प्रधानता दी जाती है, जबकि 'राष्ट्रवादी' वह है जो अपने राष्ट्र या देश के कल्याण का पक्षपाती हो। राष्ट्रीयता का तात्पर्य है अपने राष्ट्र के विशेष गुण अथवा अपने राष्ट्र के प्रति उत्कट प्रेम। राष्ट्रीयता सही को अर्थों को स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, डॉ. हेडगेवार, डॉ. आंबेडकर, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, रामधारीसिंह दिनकर आदि महापुरुष ने बखूबी समझा था, इसलिए उनके संवाद, उनके संदेश, उनकी कविताएं "राष्ट्रीयता" के परिचायक थे।

मीडिया का जनमानस पर एक सामाजिक प्रभाव है इसके सात ही इसका प्रभाव सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और नैतिक पहलुओं पर भी पडता है और उसकी स्थिरता और अस्थिरता के भी जिम्मेदार होता है। जन संचार के माध्यम से लोक कला की प्रस्तुति में समाज को एक संस्कृति को आकार देने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है इसका उदाहरण यूरोपीयन यूनियन की धारा 167 में मिलता है जहां मीडिया को विशेष रूप से इस अनुच्छेद के तहत संस्कृति और नीति से जोडा से गया है। जब हम मीडिआ और राष्ट्रीयता की बात करते हैं तो मीडिया अध्ययनों में खासकर उन तरीकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनमें प्रौद्योगिकियां मानवीय अंतःक्रियाओं और सामाजिक संरचनाओं को आकार देती हैं, और जिन्हें आमतौर पर 'मध्यम सिद्धांत' के रूप में परिभाषित करते हैं। मीडिया को एक नेटवर्क के रूप में परिभाषित करने वाले मैन्युल कास्टल के अनुसार समकालीन युगों को नेटवर्क के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है जिस किसी भी देश की राजनीति धार्मिक और राष्ट्रीयता के मुद्दे शामिल होते हैं। भारत में मीडिया का विकास तीन चरणों में माना जाता है पहला दौर 19 सदी से माना जाता है जब भारत अंग्रेजी हकूमत के पैरों तले दबा कसमसा रहा था। पहले दौर की नींव उन्नीसवीं सदी में उस समय पड़ी जब औपनिवेशिक आधुनिकता के संसर्ग और

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

औपनिवेशिक हुकूमत के ख़िलाफ़ असंतोष की अंतर्विरोधी छाया में हमारे सार्वजनिक जीवन की रूपरेखा बन रही थी इस बीच अंग्रेज़ी के साथ-साथ भारतीय भाषाओं में पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन की समृद्ध परम्परा पड़ी और अंग्रेज़ों के नियंत्रण में रेडियो-प्रसारण की शुरुआत हुई। दूसरा दौर आज़ादी मिलने के साथ प्रारम्भ हुआ और अस्सी के दशक तक चला। इस लम्बी अवधि में मीडिया के प्रसार और गुणवत्ता में ज़बरदस्त बढ़ोतरी हुई। उसके विभिन्न रूप भारत को आधुनिक राष्ट्र-राज्य बनाने के लक्ष्य के इर्द-गिर्द गढ़ी गयी अखिल भारतीय सहमति को धरती पर उतारने की महा-परियोजना में भागीदारी करते हुए दिखाई पड़े। इसी दौर में टीवी का आगमन हुआ। प्रिंट मीडिया मुख्यतः निजी क्षेत्र के हाथ में, और रेडियो-टीवी की लगाम सरकार के हाथ में रही,नब्बे के दशक में भूमण्डलीकरण के आगमन के साथ तीसरे दौर की शुरुआत हुई जो आज तक जारी है।

देश के संचार माध्यमों के इन तीनों चरणों के आलावा पारंपरिक मीडिया ने भी ऱाष्ट्रीयता की भावना को जगाने में प्रमुख योददान दिया है। “सुनो सुनो गांव वालों” यह शब्द ढोल नगाड़े के साथ जब लोगों के कानो में पड़ते थे तो लोग इसका एक विशिष्ट अर्थ लेते थे जिसे हम मुनादी के रूप में भी जानते हैं। ना सिर्फ मुनादी बल्कि नौटंकी ,डुग्गी पीटना,नाट्य लीला, कठपुतली, आदि पारंपरिक संचार माध्यमों ने भी राष्ट्रीयता के लिए महत्तवपूर्ण कार्य किया है। मुनादी तो हमेशा से ही लोगों में जागरूकता के साथ साथ राजा या राज्य शासन के प्रमुख आदेशों के आलावा लोगों की किसी एक मुद्दे पर एक मंच में जोड़ने के लिए सबसे प्रमुख माध्यम रहा है। बात करें पहले दौर के संचार माध्यमों की तो ब्रिटिश हकूमत के साथ साथ सामाजिक कुरीतियों के ख़िलाफ आवाज उठाने से लेकर उनके पुर्नरचना के लिए भी एक सश्क्त माध्यम रहे हैं। पहले दौर में संचार माध्यमों के माध्यम से समाज में जागृति लाने और ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ लोगों के एक जुट करने का प्रयास किया गया। इस दौर में संचार माध्यम मूलत: मिशनवादी रहे, वजह थी स्वतंत्रता आंदोलन व औपनिवेशिक शासन से मुक्ति। (Patel, Impact of Advancements in Technological Aids in Communication Media in Bringing About Social Reformation, 2018)

इंटरनेट के हर हाथों में पहुंच जाने के बाद सोशल मीडिया ने राष्ट्रीयता एवं देश की अँखडता के लिए एक अद्भुत संचार माध्यम की भूमिका निभाई है। पाकिस्तान पर सरिजकल स्ट्राइक से लेकर कश्मीर में पत्थर बाजों के खिलाफ चलाए गए मुहिम में लोगों ने सरकार को मजबूर

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.

कर दिया कि वे देश द्रोह और एकता के विरूद्ध कार्य कर रहे लोगों के खिलाफ कार्यवाही करे। यही नहीं जम्मू कश्मीर से धारा 377 को हटाने के बाद इंटरनेट पर सरकार के समर्थन में लोगों का उत्साह देखते ही बना। कुछ समय पूर्व तक दक्षिण भारत में हिन्दी भाषा का विरोध किया जाता था। हिन्दी सिनेमा और टीवी सीरियलों ने अपने प्रभाव से सम्पूर्ण भारत में हिन्दी समझने और बोलने वालों की संख्या बढ़ाने में सफलता पाई है। अभिनंदन के मामले में भी मीडिया के माध्यम से लोगों ने एक राष्ट्र एक सोच की भावना को प्रबल किया और एक साथ एक स्वर में पाकिस्तान के खिलाफ आवाज को बुलंद किया इस एकता का प्रतिफल हमें अभिनंदन की वापिसी के रूप में मिलता है। आयोध्य में राम मंदिर निर्माण का फैसला आने से पहले ही मीडिया लोगों से एक सूत्र में एकता का परिचय देने के लिए पहल की थी जिसका परिणाम राष्ट्रीय भावन के साथ सामने आया और विदेशो ताकतों को तमाम प्रय़ासों के बाद भी देश में शांति और एकता कायम रह सकी।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक संस्कृति और राष्ट्रीयता के प्रचार प्रसार में संचार के योगदान को नहीं किनारे नहीं नहीं किया जा सकता है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि संचार माध्यम हमेशा से ही सामाजिक,राजनैतिक, राष्ट्रीय पुर्नरचना में एक महत्तवपूर्ण भूमिका निभाते आ रहे है।

संदर्भ सूची

1. helplinetoday. (2019, 02 02). *राष्ट्रीयता क्या है-एक अध्ययन.* Retrieved from helplinetoday.com.
2. Patel, K. (2018). Impact of Advancements in Technological Aids in Communication Media in Bringing About Social Reformation. *The Global Conference on Journalism and Mass Communication, Communication,*, *1*, p. 105. Colombo. doi:10.17501/globalmedia. 2018.1101.
3. भारतकोश. (n.d.). *भारतीय संस्कृति का अर्थ.* Retrieved from bharatdiscovery.org.
4. सक्सेना, ड. (2013, 01). *भारतीय संस्कृति की अवधारणाएं-एक विवेचन.* Retrieved from pravakta.com.

© Eureka Journals 2020. All Rights Reserved.